12. राग जोग

सामान्य परिचय —

इस राग की उत्पत्ति काफी थाट से हुई मानी जाती है। इसमें दोनों गंधार लगते हैं और नि कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। रे और ध इसमें पूर्ण रूप से वर्जित हैं। वादि प सम्वादि स है। गायन-वादन समय मध्य रात्रि है। इसकी जाति औड़व है।

आरोह - नि̱ स ग म प नि̱ सं

अवरोह - सं नि̱ प म ग म ग̱ स

पकड़ - स ग म प नि̱ प ग म ग̱ स

राग जोग कोई प्राचीन राग नहीं है क्योंकि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में इस राग की चर्चा नहीं मिलती। इस राग की चर्चा आधुनिक काल के कौंस अंग में राग तिलंग के मिश्रण से हुई है।

राग जोग और तिलंग

राग तिलंग एक ठुमरी अंग का राग है जिसमें रे और ध स्वर वर्जित हैं। इसके आरोह में शुद्ध नि और अवरोह में कोमल नि लगती है और बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। राग जोग में सग म प म, ग म प नि̱ प म ग अथवा सं नि̱ प म ग म प इत्यादि स्वर समूह लेने से तिलंग की छाया प्रतीत होती है। दूसरे शब्दों में इस के अवरोह में जब तक कोमल ग नहीं लगे तब तक यह राग कुछ-2 तिलंग जैसा लगता है और आरोह में भी स ग म म, ग म प नि̱ प आदि स्वर समूह इसमें तिलंग का आभास देते हैं। इस आभास को समाप्त करने के लिए या तो प नि̱ स ग̱ स इस कोमल ग̱ नि̱ का प्रयोग करते हुए तार सप्तक की ओर जाना चाहिए। या फिर ग म प ग म ग̱ स इस प्रकार करते हुए मध्य स की ओर जाना चाहिए।

राग जोग और मालकौंस

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि राग मालकौंस में ग ध नि कोमल हैं और रे प पूर्ण रूप से वर्जित हैं।

राग जोग में मालकौंस के स्पष्ट दर्शन कहीं

नहीं होते। राग जोग का प्रमुख समूह ग म ग॒ स है जिसमें पहला ग शुद्ध और दूसरा कोमल होता है। इसलिए यदि कभी गलती से भी दोनों बार कोमल ग॒ लगा दिया जाए तो राग जोग का स्वरूप बिगड़ जाएगा और वह मालकौंस बन जाएगा जैसे ग॒ म ग॒ स। इसके अलावा कुछ विद्वानों का विचार है कि नि स ग॒ स, ग॒ नि नि स इस प्रकार के स्वर समूह जोग में कौंस अंग के सूचक हैं परन्तु सभी विद्वान इससे सहमत नहीं हैं।

राग जोग और पीलू —

राग पीलू में यूं तो सभी स्वर लगा दिए जाते हैं, परन्तु अधिकतर दोनो ग और दोनों नि और शेष स्वर शुद्ध लगा दिए जाते हैं। पीलू ठुमरी अंग का राग होने के कारण वैसे तो जोग से काफी भिन्न है, परन्तु जोग में जब स ग म प ग म नि॒ प ग इस प्रकार का टुकड़ा प्रयोग किया जाता है तो पीलू का हलका सा आभास मिलता है। इससे बचने का एक उपाय तो यह है कि ग म प नि॒ प म ग॒ इस प्रकार कोमल नि पर प का कण और कोमल ग पर म का कण देते हुए रखा जाए इसके बाद जोग को स्पष्ट करने के लिए स ग म म ग॒ ऽ स इस प्रकार रे को छोड़ते हुए ग॒ से स तक मींड द्वारा जोड़ा जाए। साथ ही कोमल ग पर स का कण देना नहीं भूलना चाहिए।

राग जोग और खमाज —

राग खमाज में रे ध नहीं लगते और कि ग नि कोमल लगते हैं। खमाज में हर जगह कोमल ग नि लगेंगे परन्तु जोग के आरोह में शुद्ध ग है। जब हम जोग के प नि॒ स ग स आदि स्वरसमूह में प्रयोग करेंगे तो खमाज की छाया पड़ेगी अतः इससे बचने के लिए बार-2 शुद्ध ग का प्रयोग करना चाहिए जैसे खमाज की छाया — प नि॒ स ग॒ स, स ग॒ नि॒ प नि॒ स।

शुद्ध ग के प्रयोग द्वारा खमाज राग से बचाव — नि॒ स ग ग म म ग॒ स।

विशेषताएँ :

① **आधुनिक राग :**

राग जोग कोई प्राचीन राग नहीं है। इस राग की रचना आधुनिक काल में प्रसिद्ध गायक उस्ताद ~~निसार~~ निसार हुसैन खाँ द्वारा हुई, जोकि उत्तर प्रदेश के बदायूँ नामक स्थान के निवासी थे।

② **रागमिश्रण :** इस राग की रचना राग धानी में और दोनों गंधार लगाने से हुई है। कुछ विद्वानों का यह भी विचार है कि मालकौंस अंग के मिलाने के मिश्रण से राग जोग बना है।

③ **दोनों गंधारों का प्रयोग :** इस राग में जो गंधार शुद्ध म से पहले आता है वो शुद्ध, और जो षड्ज से पहले आता है, वो कोमल होता है जैसे कि ग म ग सा।

④ **स्वरों का उच्चारण :**

इस राग में कोमल नि पर ~~आन्दोलन~~ षड्ज का, तथा कोमल नि पर प का कण किया जाता है जैसे कि ~~सा नि~~ पनि सा नि सा ग सा। इसके अलावा इस राग में जितना मींड का प्रयोग किया जाए, उतना ही इसका स्वरूप खिलता है।

⑤ **प्रकृति और रस :**

राग जोग एक गंभीर प्रकृति का राग है जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है। यह एक वैराग्यमयी राग है। इसमें अधिकतर करुण, वियोग, श्रृंगार रस की रचनाएँ सुनने में आती हैं।

⑥ **चलन :**

राग जोग का चलन अधिकतर ~~मन्द, मध्य सप्तक~~ मन्द्र और मध्य सप्तकों और केन्द्रित रहता है। तार सप्तक में इसका विस्तार होता तो है लेकिन कम।

(7) राग वाचक स्वरसंगतियाँ :-

नी धनी सा रे - यह स्वर संगतियाँ (इनके गा म गा म और) राग वाचक मानी जाती है। गा म धनी सा ले ते से राग जोग स्पष्ट हो जाता है।

न्यास के स्वर :- सा गा प और अवरोह में गा।

10.5.98

पूरियाधनाश्री

सामान्य परिचय —

इस राग की उत्पत्ति पूर्वी थाट से हुई मानी गई है। इसमें रे और धु कोमल और मे तीव्र है। वादि पंचम और सम्वादि षड्ज है। समय - सांयकालीन सन्धिप्रकाश काल है। जाति सम्पूर्ण है।

आरोह — सा, नि़ रे ग, मे प, मे धु नि रें सां

अवरोह — रें नि धु प, मेग मे रे ग, मे ग रे, नि़ रे सा

पकड़ — नि़ रे ग, मे रे ग प, मे धु प

विशेषतायें

1. राग मिश्रण —

इस राग के नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें पूरिया और धनाश्री इन दो रागों का मेल है, परन्तु राग के आधुनिक स्वरूप को देखने से ऐसा नहीं लगता। आजकल पूरिया और धनाश्री इन दो रागों के जो स्वरूप प्रचलित हैं, उनके अनुसार पूरिया मारवा थाट का राग है, जिसमें रिखब कोमल, मध्यम तीव्र और पंचम वर्जित है। जबकि धनाश्री काफी थाट का राग है जिसमें ग और नि कोमल और आरोह में रे ध वर्जित हैं। इस प्रकार आधुनिक दृष्टिकोण से पूरियाधनाश्री में पूरिया के मिश्रण की बात तो स्वीकार की जा सकती है - परन्तु धनाश्री के मिश्रण की नहीं। कुछ विद्वानों का कथन है कि वास्तव में पूरियाधनाश्री में प्राचीन कालीन पूर्वी थाट की धनाश्री का मिश्रण है जो आजकल प्रचार में नहीं है। परन्तु आधुनिक दृष्टिकोण से इस राग में पूरिया और पूर्वी का मिश्रण ही माना जा सकता है।

2. आरोह में षड्ज और पंचम का लंघन —

इस राग में यूं तो आरोह में सातों स्वर लगते हैं परन्तु राग सौंदर्य की दृष्टि से इसके आरोह के चलन को मध्य 'सा' के स्थान पर मंद्र 'नि़' से आरम्भ करते हैं तथा 'सा' को छोड़ते हुए रे ग पर जाते हैं जैसे नि़ रे ग। मध्य 'नि' से तार सप्तक की ओर जाते हुए भी ऐसा ही करते हैं। इसी प्रकार तीव्र 'मे' से तार सप्तक की ओर जाते हुए अक्सर पंचम का लंघन

किया जाता है जैसे मे ध्प नि रे सं ।

③ प्रकृति और रस —

इस राग की प्रकृति गंभीर है। इसलिए यह राग करुण रस की रचनाओं के लिए बड़ा उपयुक्त है। वैसे इसमें शान्त (भक्ति) और कभी-2 श्रृंगार रस की रचनाएं भी सुनने में आती हैं।

④ चलन —

इस राग का चलन तीनों सप्तकों में होता है।

⑤ राग वाचक स्वर संगति —

इस राग में 'मे रे ग प' की स्वर संगति रागवाचक है, जो कि राग विस्तार में बार-2 प्रयुक्त होती है।

⑥ मींड कण और गमक —

राग की प्रकृति को देखते हुए इसमें मींड और कण के साथ-2 गमक का प्रयोग भी शोभा देता है। विशेष रूप से मींड तो इसमें करुण रस की अभिव्यक्ति में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है।

⑦ रचनाएं —

इस राग में गायन में विलम्बित ख्याल, द्रुत ख्याल, तराना, ध्रुवपद और धमार तथा वादन में विलम्बित और द्रुत गतें सुनने में आती हैं। यह ठुमरी अंग का राग नहीं है। इसलिए इसमें उपशास्त्रीय संगीत की रचनाएं नहीं गाई बजाई जाती।

⑧ न्यास के स्वर — स ग प और नि ।

⑨ पूरिया धनाश्री और अन्य राग —

पूरियाधनाश्री के निकटवर्ती रागों में पूरिया और पूर्वी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि इन रागों के मिश्रण से ही इस राग की रचना हुई है।

~~① पूरियाधनाश्री~~

1. पूरियाधनाश्री और पूरिया —

राग पूरिया मारवा थाट का राग है जिसमें

रे कोमल, मं तीव्र और प वर्जित है। राग पूरियाधनाश्री में मंद्र 'नि' से लेकर तीव्र 'मं' तक पूरिया के दर्शन होते हैं, पूरिया में ग वादि और नि सम्वादि है। इसलिए पूरियाधनाश्री में इन स्वरों पर न्यास करने से और नि रे ग, मं रे ग, नि मं ग आदि स्वर संगतियों का प्रयोग करने से पूरिया का आभास मिलता है। परन्तु पंचम और कोमल धैवत के लगाते ही यह आभास समाप्त हो जाता है जैसे - नि रे ग, मं रे ग, नि रे नि मं ग आदि के बाद मं ग मं धु प ऐसा लेने से पूरियाधनाश्री स्पष्ट हो जायगा। इसके इलावा पूरिया से बचने के लिए मं रे ग प, मं धु प आदि स्वर संगतियों को बार-2 लेते रहना चाहिए। यूं भी 'मं रे ग प' की स्वर-संगति इस राग में राग वाचक है।

2. पूरियाधनाश्री और पूर्वी -

राग पूर्वी अपने थाट का आश्रय राग है क्यों कि इसी राग के नाम पर इसके थाट का नाम रखा गया है। इस राग में रे धु कोमल और दोनों मध्यम लगते हैं। वादि स्वर ग और सम्वादि नि है। राग पूरियाधनाश्री में नि रे ग मं प, मं धु प, मं धु नि धु प - इस प्रकार की स्वर संगतियाँ लेने से पूर्वी का आभास मिलता है जिस से बचने के लिए मं ग रे ग, मं ग मं रे ग, मं रे ग प की स्वर संगतियों को बार-2 लेना चाहिए। पूरियाधनाश्री में 'मं ग रे ग रे सा' ऐसा स्वर समूह कभी नहीं लेना चाहिए अन्यथा पूर्वी की छाया आ जायगी। राग पूर्वी में दोनों मध्यम लगते हैं जैसे प मं ग म ग, मं ग रे ग रे स, लेकिन पूरियाधनाश्री में शुद्ध 'म' नहीं लगता।

(10) मतभेद

पूरियाधनाश्री में कुछ विद्वान ग वादि और नि सम्वादि मानते हैं परन्तु ऐसा मानना इसलिए उचित नहीं है क्योंकि पूरिया और पूर्वी में भी ग वादि और नि सम्वादि है। इसलिए पूरियाधनाश्री में इन रागों से बचने के लिए प वादि और स सम्वादि मानना ही उचित है।